उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के सहयोग से
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

22-23 अक्टूबर, 2018 ई.

विषय

लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान

पंजीयन प्रपत्र

1. नाम ……………………………………
2. पद ……………………………………
3. विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/संस्था ……………………………………
……………………………………
……………………………………
4. पत्र व्यवहार का पता ……………………………………
……………………………………
……………………………………
दूरभाष/मोबाइल ……………………………………
फैक्स ……………………………………
ई-मेल ……………………………………
5. शोध-प्रपत्र-शीर्षक ……………………………………
……………………………………
……………………………………
6. पंजीयन शुल्क- रु. 500/-
बैंक ड्राफ्ट सं. ……………………………………
बैंक का नाम ……………………………………
बैंक ड्राफ्ट जारी होने की तिथि ……………………………………

दिनांक …………………… हस्ताक्षर……………………

आयोजन-समिति

मुख्य संरक्षक
परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर
महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज
मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश/प्रबन्धक, प्रबन्ध समिति

प्रो. उदय प्रताप सिंह
पूर्व कुलपति/अध्यक्ष प्रबन्ध समिति

संरक्षक
प्रो. विजय कृष्ण सिंह
मा. कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. राजनारायन शुक्ल
अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ

अध्यक्ष/संयोजक
डॉ. प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सह संयोजक
श्री सुबोध कुमार मिश्र
अध्यक्ष प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

आयोजन सचिव
डॉ. आरती सिंह
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

सदस्य

डॉ. विजय कुमार चौधरी	डॉ. अरुण कुमार राव	श्रीमती विभा सिंह
डॉ. रघुवीर नारायण सिंह	श्री प्रखर वैभव सिंह	श्री जीतेन्द्र कुमार प्रजापति
डॉ. शिव कुमार बर्नवाल	डॉ. प्रज्ञेश कुमार मिश्र	डॉ. रमाकान्त दुबे
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	डॉ. कृष्ण कुमार	सुश्री किरन सिंह
श्रीमती कविता मनभ्यान	डॉ. अभिषेक वर्मा	डॉ. सौरभ कुमार सिंह
डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	श्रीमती पुष्पा निषाद	डॉ. वैकुंठ रमण
डॉ. प्रवीन्द्र कुमार	डॉ. यशवन्त कुमार	श्रीमती प्रतिभा मणि त्रिपाठी
डॉ. राजेश शुक्ल	डॉ. मृत्युंजय कुमार सिंह	डॉ. नवनीत कुमार
डॉ. सुभाष कुमार गुप्ता	श्री मंजेश्वर	सुश्री रचना सिंह
श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	सुश्री दीप्ति गुप्ता	डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय
श्री नन्दन शर्मा	श्रीमती शिप्रा सिंह	डॉ. शैलेन्द्र कुमार ठाकुर
श्रीमती मनीता सिंह	डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव	डॉ. हरिन्द्र कुमार श्रीवास्तव
डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह	श्री संजय जायसवाल	श्रीमती साधना सिंह
डॉ. राम सहाय	श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह	डॉ. गौरव तिवारी
श्री विरेन्द्र तिवारी	श्री वागीश राज पाण्डेय	सुश्री नुपुर शर्मा
सुश्री आम्रपाली वर्मा	श्रीमती प्रगति पाण्डेय	डॉ. शिव कुमार
श्री प्रतीक दास	डॉ. कुसुमलता सिंह	सुश्री शालू श्रीवास्तव
श्री विनय कुमार सिंह	डॉ. अभिषेक सिंह	डॉ. भवानी नायक
श्री प्रदीप कुमार वर्मा	श्री नवनीत कुमार सिंह	श्री कृष्णभूषण लाल
सुश्री प्रियंका मिश्रा	सुश्री श्वेता चौबे	डॉ. केदारनाथ
		डॉ. अजय कुमार सिंह

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के सहयोग से

लोकभाषा संवर्धन में नाथपंथ का योगदान

विषय पर

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

22-23 अक्टूबर, 2018

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ

आयोजक

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़ - गोरखपुर
नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

☎ 7897475917, 9452971570, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com
Seminar E-mail : lokbhasha7@gmail.com

लोकभाषा संवर्धन में नाथपंथ का योगदान

भारत के सामाजिक–धार्मिक इतिहास में नाथपंथ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैदिक संस्कृति में आयी विकृतियों को रेखांकित करते हुए महात्मा बुद्ध ने मूल वैदिक संस्कृति को नवजीवन प्रदान किया। महात्मा बुद्ध के अनुयायियों ने वैदिक संस्कृति के

इस शुद्धिकरण के प्रयत्न को बौद्ध–धर्म का नाम दिया। किन्तु लगभग एक हजार वर्ष बीतते–बीतते बौद्धधर्म भी सामाजिक–धार्मिक विकृतियों एवं पाखण्डों का शिकार हो गया। कापालिकों–वामाचारियों की साधना पद्धतियाँ भारतीय संस्कृति को एक बार फिर दूषित करने लगी। छठवीं–सातवीं शताब्दी ईस्वी के आस–पास भारतीय समाज में पुनः धार्मिक क्रान्ति की भूमि तैयार हो चुकी थी। इसी परिदृश्य में आदि शंकराचार्य एवं महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ का अभ्युदय हुआ। महायोगी गुरू श्री गोरखनाथ ने आदिनाथ अर्थात भगवान शिव के उपदेशामृत से योगी मत्स्येन्द्रनाथ द्वारा प्रवर्तित लोक–जीवन में व्याप्त नाथपंथ का पुनर्गठन किया, उसे युगानुकूल विकसित किया और एक ऐसे धार्मिक–आन्दोलन को जन्म दिया जिसने भारतीय धर्म एवं संस्कृति को एक नयी दिशा प्रदान की। इसी धार्मिक आन्दोलन की पृष्ठभूमि में मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन का जन्म हुआ।

धर्म–अध्यात्म के इस नए युग ने भक्ति–साहित्य के रूप में भारतीय भाषाओं यथा लोकभाषाओं को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महायोगी गुरू श्री गोरखनाथ एवं उनके द्वारा प्रवर्तित नाथपंथ के योगियों ने लोक–जीवन, लोक–संस्कृति एवं लोकभाषा को अनवरत समृद्ध करते रहे। महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ की रचनाएँ संस्कृत, अवधी, ब्रज, खड़ी बोली अर्थात् हिन्दी इत्यादि भाषाओं/लोकभाषाओं में प्राप्त होती हैं। इसी क्रम में सिद्धसाहित्य एवं नाथ साहित्य की एक लम्बी परम्परा मिलती है। इसी साहित्य परम्परा से सन्त–साहित्य को प्रेरणा मिली। उदाहरणार्थ गोरखनाथ एवं सरहपाद का हठयोग कबीर की रचनाओं में मिलता है। नाथ योगियों के दोहा और पदशैली को बाद के सभी हिन्दी कवियों ने अपनाया।

वस्तुतः नाथपंथी साहित्य और उसकी भाषा ही भारतीय भाषाओं के विकास की आधार–शिला बनी। विशेषकर लोकभाषा के संवर्धन में नाथपथ के सिद्धों–योगियों द्वारा वाचिक–लिखित लोक–साहित्य का अप्रतिम योगदान है। दुर्भाग्य से इस दिशा में शोध–परक अध्ययन बहुत ही कम हुए। कुछ विद्वानों द्वारा थोड़ा–बहुत कार्य हुआ भी तो वे भाषा के इतिहास में स्थान नहीं पा सके। अतः **'लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान'** विषयक संगोष्ठी लोकभाषा के विकास को रेखांकित करने एवं उसके युगानुकूल संरक्षण–संवर्धन का मार्ग प्रशस्त करेगी।

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज जंगल धूसड़ के प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग तथा हिन्दी विभाग द्वारा उपर्युक्त विषय पर एक **राष्ट्रीय संगोष्ठी 22–23 अक्टूबर, 2018 ई.** को आयोजित है। उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा प्राप्त आर्थिक एवं अकादमिक सहयोग से यह राष्ट्रीय संगोष्ठी अत्यन्त परिणामकारी होगी।

संगोष्ठी में आमन्त्रित विषय-विशेषज्ञ

1.	**प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त**	– लखनऊ
2.	**श्री नरेन्द्र कोहली**	– नई दिल्ली
3.	**श्री रमेश चन्द्र शाह**	– भोपाल
4.	**श्री शत्रुघ्न प्रसाद**	– पटना
5.	**डॉ. कन्हैया सिंह**	– आजमगढ़
6.	**डॉ. यू.पी. सिंह**	– वाराणसी
7.	**डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी**	– जौनपुर
8.	**प्रो. सुरेन्द्र दूबे**	– झाँसी
9.	**श्री रवीन्द्र श्रीवास्तव उर्फ जुगानी भाई**	– गोरखपुर
10.	**प्रो. गणेश पाण्डेय**	– गोरखपुर
11.	**प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह (अवकाश प्राप्त)**	– इलाहाबाद
12.	**प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह**	– इलाहाबाद
13.	**प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय**	– आगरा
14.	**प्रो. हरिशंकर मिश्र**	– लखनऊ
15.	**डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय**	– गोरखपुर
16.	**डॉ. प्रवीण मधुकर राव कुलकर्णी**	– औरंगाबाद
17.	**डॉ. आनन्दशंकर सिंह**	– इलाहाबाद
18.	**डॉ. रजनीश शुक्ल**	– नई दिल्ली
19.	**प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा**	– सागर
20.	**प्रो. वागीश**	– बस्ती

शोध-प्रपत्र

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध–प्रपत्र/आलेख में विषय वस्तु का उद्देश्य, प्रयुक्त विधितन्त्र एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। हिन्दी एवं लोकभाषा में रुचि रखने वाले अध्यवसायी शोधार्थियों एवं विद्वानों के शोध पत्र/आलेख आमन्त्रित हैं। शोध–पत्र/आलेख अधिकतम 2500 शब्दों में 30 सितम्बर 2018 तक ई–मेल lokbhasha7@gmail.com पर पहुँच जाने चाहिए। शोध–प्रपत्र ए–4 आकार के कागज पर कम्प्यूटर कम्पोजिंग एवं सी.डी., (वाक्मैन चाणक्य) महाविद्यालय के पते पर भेजे। निर्धारित समय से पूर्व प्राप्त शोध–पत्र का प्रकाशन पुस्तक के रूप में किया जायेगा। शोध प्रपत्र हिन्दी, संस्कृत, लोकभाषा एवं अंग्रेजी में स्वीकृत होंगे।

पंजीयन

पंजीयन शुल्क रू. 500.00 है। आमंत्रित अतिथियों/विषय–विशेषज्ञों को पंजीयन कराने की आवश्यकता नहीं है। पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में **'प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़'** के नाम से अथवा नकद, गोरखपुर में देय अनुमन्य होगा।

आवास एवं भोजन-व्यवस्था

आवास एवं भोजन–व्यवस्था आयोजकों की ओर से निःशुल्क रहेगी।

गोरखपुर परिक्षेत्र : एक दृष्टि में

गोरखपुर महायोगी गुरु गोरखनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर–पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के सभी शिक्षा केन्द्रों/महानगरों से रेल, सड़क तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। नगर के पार्श्व में अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित है। भगवान बुद्ध का गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपहरवा) यहाँ से लगभग 90 किमी. की दूरी पर है। गोरखपुर नगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण–स्थली कुशीनगर 50 किमी. की दूरी पर स्थित है। मध्ययुगीन सन्त एवं समाज सुधारक तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता के पोषक सन्त कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से 20 किमी. दूरी पर स्थित है। यहाँ से नेपाल सीमा की दूरी लगभग 100 किमी. है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क–मार्ग से सुगमतापूर्वक जाया जा सकता है। काठमाण्डु गोरखपुर से 400 किमी. की दूरी पर है। इन समस्त स्थलों की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा सरलतापूर्वक की जा सकती है। नगर–क्षेत्र में भी अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें गोरखनाथ–मन्दिर, गीता वाटिका, गीता प्रेस, विष्णु मन्दिर आदि प्रमुख हैं। अक्टूबर माह में गोरखपुर का मौसम प्रायः सामान्य एवं सुहावना रहता है। रात्रि में हल्की ठंड पड़ सकती है।

22-23 अक्टूबर 2018 दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन

संगोष्ठी में उपस्थित अतिथिगण एवं प्रतिभागी

संगोष्ठी का समापन समारोह में मंचीसन अतिथि

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

२२-२३ अक्टूबर २०१८

हिन्दी विभाग

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ
एवं
महाराणा प्रताप पी॰ जी॰ कालेज जंगल धूसड़ गोरखपुर
के संयुक्त तत्वाधान में

विषय- "लोक भाषा संवर्धन में नाथपंथ का योगदान"

उद्घाटन समारोह — २२ अक्टूबर संगोष्ठी का प्रथम दिवस

अध्यक्ष - प्रो॰ उदय प्रतापसिंह,
पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल वि॰वि॰ जौनपुर

मुख्य अतिथि - डॉ॰ राजनारायण शुक्ल
अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ, उ॰प्र॰

मुख्य वक्ता - प्रो॰ रामदेव शुक्ल
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दी॰द॰उ॰गो॰ वि॰वि॰गो॰

बीज वक्तव्य - डॉ॰ यू॰ पी॰ सिंह
अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग

प्राचार्य - डॉ॰ प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी॰ जी॰ कालेज जंगलधूसड़ गो॰

संचालन — डॉ॰ अविनाश प्रताप सिंह
प्रभारी राजनीति शास्त्र विभाग महाराणा प्रताप पी॰ जी॰ कालेज जंगल धूसड़ गो॰

इस अवसर पर वि॰वि॰ सहित महाविद्यालयों के शिक्षक तथा गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

प्रथम तकनीकी सत्र

अध्यक्ष - डॉ० कन्हैया सिंह
पूर्व, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, उत्तर प्रदेश

मुख्य वक्ता - डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी
पूर्व संकायाध्यक्ष, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल वि.वि. जौनपुर, उ.प्र०

आभार - डॉ० विजय कुमार चौधरी
अध्यक्ष, मुगोल विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

संचालन - सुश्री श्वेता चौबे
प्रवक्ता, वाणिज्य विभाग, महाराणा पी.जी.कालेज जंगल धूसड़ गोरखपुर।

→ 08 की संख्या में शोधपत्रों का वाचन किया

द्वितीय तकनीकी सत्र

अध्यक्ष — श्री रविन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी भाई'
भोजपुरी साहित्य के प्रतिष्ठित साहित्यकार

मुख्य वक्ता - डॉ० अर्जुन प्रताप सिंह
अवा. एसो.प्रो.एवं पूर्व विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, राजकीय रणजय पी. जी. कालेज, अमेठी

मुख्य वक्ता — डॉ० फूलचन्द प्रसाद गुप्त
प्रवक्ता - हिन्दी, महाराणा प्रताप इण्टर कालेजगोरखपुर

आभार — डॉ० महेन्द्र प्रताप सिंह
प्रभारी, राजनीति विभाग, महाराणा प्रताप पी. जी. कॉलेज जंगल धूसड़, गोरखपुर

संचालन → श्रीमती पुष्पा निषाद
प्रवक्ता, बी. एड. विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी.
कॉलेज, जंगल धूसड़ गोरखपुर
→ 11 की संख्या में शोध पत्रों का वाचन हुआ

तृतीय तकनीकी सत्र

संगोष्ठी का द्वितीय दिवस — 23 अक्टूबर

अध्यक्ष - प्रो० रामकिशोर शर्मा
सेवानिवृत्त आचार्य, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद
वि० वि० इलाहाबाद ।

मुख्य वक्ता - डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय
पूर्व प्राचार्य, किसान पी. जी. कालेज,
सेवरही, कुशीनगर

मुख्य वक्ता - डॉ० भानु प्रताप सिंह
कुँवर सिंह कालेज आरा भोजपुर
बिहार

आभार - डॉ० ब्रजभूषण लाल
प्रवक्ता, समाज शास्त्र, एम. पी. पी. जी. कालेज

संचालन - डॉ० आभा श्रीवास्तव
प्रवक्ता - बी. एड, एम. पी. पी. जी. कालेज
जंगल धूसड़, गोरखपुर

इस सत्र में 07 की संख्या में शोध पत्रों का वाचन हुआ।

चतुर्थ तकनीकी सत्र

अध्यक्ष - डॉ० यू० पी० सिंह
अध्यक्ष, उ०प्र० हिन्दुस्तान एकेडमी,
प्रयाग उ०प्र० प्रदेश

मुख्य वक्ता - डॉ० बच्चे लाल
चीफ प्रक्टोरल फेलो, आई.सी.एच.
आर, वाराणसी, उ०प्र०

अभार - श्रीमती प्रतिभा मणि त्रिपाठी
प्रवक्ता, बी०एड० विभाग, महाराणा प्रताप पी.
कालेज जंगल धूसड़ गोरखपुर

संचालन - डॉ० वेंकट रमन पाण्डेय
प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, महाराणा प्र
पी, जी, कालेज जंगल धूसड़, गोरख

→ इस सत्र ०८ शोध पत्रों का वाचन हुआ

समापन, समारोह 23 अक्टूबर

अध्यक्ष - डॉ० प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य
महाराजा प्रताप पी, जी, कालेज जं
धूसड़ गोरखपुर।

मुख्य अतिथि - प्रो० राम किशोर शर्मा
सेवानिवृत्त आचार्य, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद, वि० वि० इलाहाबाद।

गरिमामय उपस्थिति -
* डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय
* डॉ० अनुज प्रसाद सिंह
* डॉ० विश्वनाथ शर्मा

* श्री अशोक कुमार 'रामप्रसन्न'
* डॉ० रविन्द्र कुमार 'शाहाबादी'
* डॉ० सिद्धार्थ शुक्ल

संचालन - डॉ० आरती सिंह
हिन्दी विभागप्रभारी, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज जंगल धूसड़ गोरखपुर

संगोष्ठी में उपस्थिति -

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी विषय- लोक भाषा संवर्धन में नाथपंथ का योगदान' में अन्य महाविद्यालयों के शिक्षक प्रतिभागी, अन्य विषयों के प्रतिभागी, वि० वि० के आचार्य गण, गणमान्य अतिथि, शोधार्थी महाविद्यालय के शिक्षक, छात्र/छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम संचालन के रूप में हिन्दी विभाग प्रभारी डॉ० आरती सिंह ने अपने दायित्वों का निर्वहन किया।

समावर्तन–2019

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर बोलते डॉ. यू.पी. सिंह

22 व 23 अक्टूबर को महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ एवं महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर द्वारा संचालित गुरू श्री गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में ''लोक भाषा के संवर्धन में नाथपंथ के योगदान'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 22 अक्टूबर को उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. राजनारायण शुक्ल एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो. रामदेव शुक्ल उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल वि.वि., जौनपुर के पूर्व कुलपति प्रो. यू.पी. सिंह ने की। कार्यक्रम का संचालन राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रभारी डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने किया। दूसरे दिन समापन अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में मॉरीशस के शिक्षा मंत्रालय के डॉ. अशोक कुमार रामप्रसन्न, मुख्य वक्ता डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव तथा समापन कार्यक्रम का संचालन डॉ. आरती सिंह ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर उपस्थित विद्ववतजन

दैनिक जागरण गोरखपुर, 23 अक्टूबर 2018

यूथ जंक्शन

www.jagran.com

हिंदी-भोजपुरी के आदि कवि हैं गुरु गोरक्षनाथ

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. राजनारायण ने कहा, पाठ्यक्रम में देना होगा स्थान

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. राजनारायण शुक्ल ने गुरु गोरक्षनाथ को हिंदी एवं भोजपुरी का आदिकवि बताया है। डॉ. शुक्ल ने कहा है कि गुरु गोरक्षनाथ और उनके दर्शन अकादमिक जगत की उपेक्षा के शिकार रहे हैं। पाठ्यक्रम और अकादमिक क्षेत्र में उन्हें उपयुक्त स्थान न मिलने के कारण हिन्दी सहित लोकभाषा संवर्धन में गुरु गोरखनाथ एवं नाथपंथ के योगियों का योगदान अब तक कुछ विद्वानों के मौलिक शोधों और पुस्तकों के अलावा सामान्य जगत में रेखांकित नहीं किया जा सका।

वह सोमवार को महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ और उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान द्वारा संचालित गुरू श्री गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केंद्र के तत्वावधान में 'लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि अपने विचार रख रहे थे।

डॉ. शुक्ल ने कहा कि भक्त कवियों के अलावा लोकभाषा को नाथपंथ के योगियों ने जितना समृद्ध किया, शायद ही कोई पंथ, सम्प्रदाय अथवा भारत के अन्य धार्मिक-आध्यात्मिक संगठन ने किया हो।

गद्यविधा के प्रथम प्रयोगकर्ता हैं गुरु गोरक्षनाथ : संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो. रामदेव शुक्ल ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ हिंदी एवं भोजपुरी दोनों के आदिकवि ही नहीं अपितु लोकभाषा में गद्यविधा के प्रथम प्रयोगकर्ता हैं। उन्होंने बताया कि गोरखपुर विश्वविद्यालय में गोरखनाथ सार संग्रह तैयार कराने के साथ गोरखनाथ पर पहला शोध हिंदी विभाग में उनके निर्देशन में कराया गया। प्रो. रामदेव ने कहा कि भाषा का जहां तक प्रश्न है गोरखनाथ की गोरखबानी में भाषा आकार लेने लगी थी। लोकभाषा वही बनती है जिसमें गद्यात्मक रचना प्रारंभ हो।

एमपीपीजी कॉलेज जंगल धूषण में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. राजनारायण शुक्ल • जागरण

एमपीपीजी कॉलेज में 'लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान' विषय पर आयोजित है दो दिनी संगोष्ठी

गोरखनाथ और नाथपंथ की गद्यात्मक रचनाएं 1333 ई. में प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार गोरखनाथ और उनके नाथपंथ ने हिंदी एवं भोजपुरी भाषा के आदि रचनाकार थे और उसके विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया। प्रो. शुक्ल ने कहा कि हिंदी की पहली रचना गोरखनाथ की सबदा है। उनके योगदान को लेकर अभी बहुत से शोधात्मक कार्य करने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए पूर्व कुलपति प्रो. यूपी सिंह ने कहा कि नाथपंथ साहित्य और योगियों की बसियां लोकभाषा में नाथपंथ के अवदान का प्रमाण है। इन विषयों पर स्थापित शोध पीठों को स्रोत संग्रह, व्याख्या एवं नई दृष्टि से शोधपूर्ण कार्य कराने की चुनौती स्वीकारनी होगी। इससे पहले उत्तर प्रदेश हिन्दुस्तानी एकेडमी के अध्यक्ष डॉ. यू.पी. सिंह ने कहा कि प्रारम्भ में हिंदी साहित्य का लेखन ऐसे हाथों मे था, जिन्होंने भारतीय संस्कृति के विविध पक्ष को समझा नहीं अथवा जान बूझकर उपेक्षित किया। गोरखनाथ ने सामाजिक परिवर्तन एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण का जो अभियान चलाया वह इसीलिए जन-जन को जोड़ पाया, क्योंकि वे लोकभाषा का उपयोग कर रहे थे।

उद्घाटन समारोह का संचालन, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने तथा स्वागत एवं प्रस्तावना प्रस्तुति प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने की। कार्यक्रम में कॉलेज के शिक्षक एवं छात्र- छात्राओं के अलावा शहर के अनेक गणमान्य जनों की मौजूदगी रही।

भोजपुरी समृद्ध हो लेकिन हिंदी से अलग होकर नहीं

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. राजनारायण शुक्ल भोजपुरी साहित्य की समृद्धि की वकालत तो करते हैं लेकिन उसकी सत्ता हिंदी से अलग करके देखने को तैयार नहीं। उनका कहना है कि भोजपुरी हिंदी से अलग नहीं। अगर भोजपुरी, अवधी, ब्रज आदि बोलियों को हिंदी से अलग कर दिया जाएगा तो उसका अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। डॉ. शुक्ल सोमवार को महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूषण में आयोजित एक संगोष्ठी में हिस्सा लेने के बाद दैनिक जागरण से अपने विचार साझा कर रहे थे। भोजपुरी को भाषा माने जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि भले ही भोजपुरी भाषा बनने के निकट पहुंच गई है लेकिन प्रकारांतर से वह हिंदी का अभिन्न हिस्सा है। नई पीढ़ी के साहित्यकारों की भाषा के प्रति जिम्मेदारी तय करते हुए डॉ. शुक्ल ने कहा कि वह विज्ञान को भी साहित्य का हिस्सा बनाएं और यह साहित्यिक सृजन हर भाषा में हो। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वह जनोपयोगी साहित्य रचें, जिसका लाभ लोगों को मिल सके। ऐसा सृजन करने वाले साहित्यकारों को भाषा संस्थान न केवल नकद पुरस्कार देकर सम्मानित करेगा बल्कि उनकी रचनाओं का प्रकाशन भी सुनिश्चित करेगा। बातचीत के क्रम में भाषा संस्थान के अध्यक्ष यह बताना नहीं भूले कि साहित्य के नवांकुरों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदेश सरकार ने एक-एक लाख रुपये के गोपाल दास नीरज पुरस्कार की घोषणा की है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस घोषणा से निश्चित रूप से युवा साहित्यकार उत्साहित होंगे और जिससे उनके सृजन का स्तर भी बढ़ेगा।

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी की घंटी में शिक्षक और प्राचार्य भी बन जाते हैं विद्यार्थी

हिन्दुस्तान खास

गोरखपुर | प्रमुख संवाददाता

अभियान

- एमपीपीजी कालेज जंगल धूसड़ में भाषा दुरुस्त करने का अनूठा अभियान
- कालेज में हर शनिवार दो घंटे लगती है हिन्दी की क्लास

एमपीपीजी में हिंदी की कक्षा में पढ़ाते डा. वेद प्रकाश पांडेय

हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इसके बाद भी कोई 'क', 'ख', 'ग', 'घ' सुनाने को कह दे तो हममें से बहुतों को दिक्कत होने लगती है। ऐसी ही दिक्कतों को महसूस कर जंगल धूसड़ स्थित महाराणा प्रताप पीजी कालेज ने अनूठा प्रयोग किया है। हर शनिवार वहां लगने वाली हिन्दी की कक्षा में शिक्षक और प्राचार्य भी विद्यार्थी बनकर बैठते हैं।

कक्षा, दोपहर एक से तीन बजे तक यानि कुल दो घंटे बिना ब्रेक के चलती है। [illegible] पीजी कालेज [illegible] से 2006 [illegible] रिटायर वेद प्रकाश पांडेय इस साल अगस्त से पढ़ाने आ रहे हैं। अब तक लगी कुल आठ-दस कक्षाओं में ही असर दिखने लगा है। विद्यार्थियों-शिक्षकों का उत्साह इस कदर है कि घंटी लगने के दो से तीन मिनट में कक्षा ठसाठस भर जाती है।

पहले दिन फेल, अब फर्राटे से [illegible] वर्णमाला [illegible] तक अब हिन्दी वर्णमाला के 52 अक्षर फर्राटे से सुनाते हैं। जबकि पहले दिन कोई भी 52 के 52 अक्षर सुनाने में सफल नहीं हो पाया था। कईयों ने तो वर्णमाला के अक्षरों की संख्या भी 4[illegible] या 50 ही गिनाई थी। बीएड की विभागाध्यक्ष डा.शिप्रा सिंह [illegible] कि आधा 'न' और हलन्त [illegible] थीं। इससे पहले अक्सर गलतियां होती [illegible]

शुद्धता पर जोरः शिक्षक वेद प्रकाश पांडेय का भाषा की शुद्धता को लेकर गजब का आग्रह है। महाविद्यालय के शिक्षक सुबोध मिश्र कहते हैं कि सबसे बड़ा फायदा उच्चारण में मिल रहा है। पहली बार पता चला कि हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे [illegible] ही नहीं है, जैसे [illegible] हैं जिनका स्त्रीलि[illegible] 'चीता' [illegible] और बड़ी 'ई' के [illegible] को लेकर स्पष्टता आई है। अनुस्वर, वर्तनी, अर्द्धाक्षरों, मात्राओं, अल्प विराम, पूर्ण विराम जैसे सम्बोधन चिह्नों के बारे में जानकारी हुई है। वाक और लेखन शैली में परिवर्तन साफ दिख रहा है।

छात्र-छात्राओं का बढ़ा उत्साहः हिन्दी बेहतर हुई है तो मातृभाषा में पढ़ाए जाने वाले विषयों को लेकर छात्र-छात्राओं का उत्साह भी बढ़ा है। बीएड छात्रा राधिका शर्मा कहती हैं, 'पहले वर्तनी में बहुत सी अशुद्धियां होती थीं। मुझे नहीं मालूम था कि श्रीमन् में कैसे हलन्त लगाते हैं। स्त्रीलिंग, पुलिंग को लेकर अक्सर भ्रम होता था। सब अब ठीक हो रहा है तो विषयों [illegible] का आनन्द और आत्मविश्वास भी बढ़ गया है।' छात्र [illegible] का कहना है कि ऐसी कक्षाएं हर महाविद्यालय में चलनी चाहिए।

2014 से चलती रहती है अंग्रेजी की क्लास

महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ में वर्ष 2014 से अंग्रेजी भाषा की भी क्लास शुरू हुई थी। महात्मा गांधी इंटर कालेज से सेवानिवृत्ति शिक्षक रोहिताश्व श्रीवास्तव कॉलेज प्रशासन के अनुरोध पर पढ़ाने जाते थे। बीच-बीच यह क्लास अब भी चलती है।

> "हिन्दी की घंटी शुरू होने के बाद भाषा की शुद्धता को लेकर कालेज में हर कोई सतर्क दिखता है। मुझे खुशी है कि हम उस सामग्री से ज्ञान पाने की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं।"
>
> डा.प्रदीप राव, प्राचार्य, एमपीपीजी कालेज जंगल धूसड़

लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले वक्ता, लोकभाषा में ग[illegible]धा के प्रथम प्रयोगकर्ता थे महायोगी गोरखनाथ

हिन्दी और भोजपुरी के आदिकवि हैं महायोगी गोरक्षनाथ: डॉ. राजनारायण शुक्ल

गोरखपुर | वरिष्ठ संवाददाता

नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरक्षनाथ हिन्दी एवं भोजपुरी के आदिकवि हैं। संस्कृत के आदिकवि महर्षि वाल्मीकि की तरह गुरु गोरक्षनाथ और उनके दर्शन की अकादमिक जगत में उपेक्षा हुई है। लोकभाषा को नाथपंथ के योगियों ने जितना समृद्ध किया शायद ही कोई पंथ, सम्प्रदाय अथवा भारत के अ[illegible] धार्मिक-आध्यात्मिक संगठन ने किया हो।

ये बातें उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष और साहित्यकार डॉ. राजनारायण शुक्ल ने कहीं। वह महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान एवं महाविद्यालय द्वारा संचालित गुरु श्री गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में 'लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। डॉ. शुक्ल ने कहा कि लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ के योगदान विषय पर अकादमिक जगत में अब तक की यह प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी है। हजारी प्रसाद द्विवेदी, ब्रिग्स, डॉ. भगवती सिंह, प्रो. रामचन्द्र तिवारी जैसे यदा-कदा विद्वानों के शोधपूर्ण कार्य जो आगे न बढ़ सका उसे यह संगोष्ठी गति देगी। उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लोक भाषाओं के संवर्धन एवं विकास में नाथपंथ सहित विविध धाराओं के योगदान पर देश भर में विविध अकादमिक आयोजनों की श्रृंखला प्रारम्भ कर रही है।

बोले वक्ता

- संस्कृत के आदिकवि महर्षि वाल्मीकि की तरह गुरु गोरक्षनाथ और उनके दर्शन की अकादमिक जगत में उपेक्षा हुई
- 'लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान' विषय पर आयोजित हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी

एमपीजी जंगल धूसड़ में आयोजित संगोष्ठी में बोलते डॉ उदय प्रताप सिंह

राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य वक्ता साहित्यकार प्रो. रामदेव शुक्ल ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ हिन्दी एवं भोजपुरी दोनों के आदिकवि ही नहीं अपितु लोकभाषा में गद्यविधा के प्रथम प्रयोगकर्ता हैं। गोरखपुर विश्वविद्यालय में गोरखनाथ सार संग्रह तैयार कराने के साथ गोरखनाथ पर पहला शोध हिन्दी विभाग में मेरे निर्देशन में कराया गया।

प्रो. शुक्ल ने कहा कि शंकराचार्य ने पूरे देश का चार बार भ्रमण किया जबकि गोरखनाथ ने कितनी बार भ्रमण किया कहना कठिन है। गोरख ऐसे आध्यात्मिक अगुवा हैं जिन्हे भारत का हर क्षेत्र अपनी भूमि में उन्हें पैदा हुआ मानता है और उन पर गर्व करता है। पूर्व कुलपति प्रो. यूपी.सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ और उनका नाथपंथ भारत के धार्मिक-आध्यात्मिक-सामाजिक परिवर्तन की धुरी है। [illegible] में योग ने सामाजिक समरसता को धर्म-अध्यात्म का आधार बनाया। समारोह का संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने तथा स्वागत प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने किया।

संगोष्ठी में डॉ. कन्हैया सिंह, [illegible] अनुज प्रताप सिंह, [illegible] सिंह, डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी, [illegible] वेदप्रकाश पाण्डेय, डॉ. [illegible] डॉ. अनुज प्रताप सिंह, डॉ. [illegible] प्रसाद गुप्त, डॉ. [illegible] सिंह, [illegible] शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ. [illegible] प्रो. सुमित्रा सिंह, डॉ. [illegible] सिंह, श्री [illegible] बहादुर चन्द, डॉ. मान्धाता सिंह आदि उपस्थित रहे।

महायोगी [illegible]रखनाथ हिंदी-भोजपुरी के आदि कवि

महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले डॉ. राजनारायण शुक्ल

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ हिंदी एवं भोजपुरी के आदिकवि माने जाते हैं। अकादमिक जगत में संस्कृत के आदिकवि महर्षि वाल्मीकि की तरह ही गुरु गोरखनाथ और उनके दर्शन की उपेक्षा हुई है। लोकभाषा को नाथपंथ के योगियों ने सर्वाधिक समृद्ध किया।

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ राजनारायण शुक्ल ने ये विचार महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ में गुरु श्री गोरखनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से 'लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में रखे। वे उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने कहा कि लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ के योगदान को महत्व नहीं दिया गया। अंदाजा इसी से लगा सकते हैं कि अकादमिक जगत में अब तक की यह पहली राष्ट्रीय संगोष्ठी है।

अध्यक्षता करते हुए पूर्व कुलपति प्रो. यूपी सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ और उनका नाथपंथ भारत के धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक परिवर्तन की धुरी है। भारत में योग ने सामाजिक समरसता को धर्म, आध्यात्म का आधार बनाया। उद्घाटन समारोह का संचालन डॉ अविनाश प्रताप सिंह तथा स्वागत प्राचार्य डॉ प्रदीप राव ने किया। संगोष्ठी में डॉ कन्हैया सिंह, डॉ अनुज प्रताप सिंह, योगेंद्र प्रताप सिंह, डॉ आद्या प्रसाद द्विवेदी, डॉ वेदप्रकाश पांडेय, डॉ अच्छेलाल, डॉ अनुज आदि थे।

कार्यक्रम को साहित्यकार डॉ राजनारायण शुक्ल व अन्य ने संबोधित किया।

'गद्यविधा के प्रथम प्रयोगकर्ता हैं महायोगी गोरखनाथ'

गोरखपुर। मुख्य वक्ता साहित्यकार प्रो रामदेव शुक्ल ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ लोकभाषा में गद्यविधा के प्रथम प्रयोगकर्ता हैं। शंकराचार्य ने पूरे देश का चार बार भ्रमण किया जबकि गोरखनाथ ने कितनी बार भ्रमण किया, कहना कठिन है। गोरखनाथ ऐसे आध्यात्मिक अगुवा हैं जिन्हें भारत का हर क्षेत्र अपनी भूमि में उन्हें पैदा हुआ मानता है, उन पर गर्व करता है। उन्होंने कहा कि हर्ष का विषय है गोरखपुर विश्वविद्यालय में गोरखनाथ सार संग्रह तैयार कराने के साथ गुरू गोरखनाथ पर पहला शोध हिंदी विभाग में मेरे निर्देशन में कराया गया।

विपरीत गुण-धर्म का संयोजन ही हठयोग : डॉ. यूपी सिंह

विश्वविद्यालय संवाद भवन में 'योग से हठयोग' विषय पर हुआ व्याख्यान

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज के अध्यक्ष डॉ. यूपी सिंह ने कहा कि जब बौद्धधर्म वज्रयानी शाखा के अनुयायी भोग व विलासिता में लिप्त हो गए तब महायोगी श्री गोरक्षनाथ ने ब्रह्मचर्य की संकल्पना का पुनर्जागरण कर हठयोग को स्थापित किया। हठयोग में 'ह' का अर्थ सूर्य तथा 'ठ' का मंतव्य चंद्रमा है। विपरीत गुण-धर्म का संयोजन ही हठयोग है।

ये विचार डॉ. यूपी सिंह ने व्यक्त किए। वे गोरखपुर [illegible]विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह सप्ताह के अंतर्गत महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ व अधिष्ठाता छात्र-कल्याण की ओर से संवाद भवन में आयोजित 'योग से हठयोग' विषय पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. वीके सिंह ने कहा कि योग शारीरिक एवं मानसिक रोगों से विमुक्ति प्रदान करता है। शोधपीठ के विशेष कार्याधिकारी एवं अभिष्ठाता छात्र-कल्याण प्रो. रविशंकर सिंह ने शोधपीठ के उद्देश्य व भावी कार्य योजनाओं पर प्रकाश डाला। संचालन प्रो. विनय सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापित कुलसचिव सुरेश चंद्र शर्मा ने किया। इस अवसर पर प्रो. विनोद कुमार, प्रो. पी श्रीवास्तव, प्रो. जितेंद्र मिश्रा, प्रो. गोपीनाथ, प्रो. एनपी भोक्ता, प्रो. हरिशरण, प्रो. राजवंत राव, प्रो. श्रीकांत दीक्षित, प्रो. शोभा गौड़, प्रो. सुधा यादव, प्रो. गोपाल प्रसाद, डॉ अशोक सिंह, महेंद्र सिंह आदि रहे।

Scanned with OKEN Scanner

नाथपंथ के योगियों ने समृद्ध की लोकभाषा

गोरखपुर (एसएनबी)। नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरक्षनाथ हिन्दी एवं भोजपुरी के आदिकवि हैं। संस्कृत के आदिकवि महर्षि वाल्मिकी की तरह ही हिन्दी के प्रथम कवि के रूप में प्रमाणित और प्रतिष्ठित गुरू श्रीगोरक्षनाथ और उनका दर्शन अकादमिक जगत की उपेक्षा के शिकार रहे। भक्त कवियों के अलावा लोकभाषा को नाथपंथ के योगियों ने जितना समृद्ध किया शायद ही कोई पंथ,सम्प्रदाय अथवा भारत के अन्य धार्मिक-आध्यात्मिक संगठन ने किया हो।

उक्त बातें उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. राजनारायण शुक्ल ने कहीं। श्री शुक्ल महाराणा प्रताप पीजी. कॉलेज, जंगल धूसड़ में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान एवं महाविद्यालय द्वारा संचालित गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में 'लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम और अकादमिक क्षेत्र में उन्हें उपयुक्त स्थान न मिलने के कारण हिन्दी सहित लोकभाषा के संवर्धन में महायोगी गोरखनाथ एवं नाथपंथ के योगियों का योगदान अब तक कुछ विद्वानों के मौलिक शोधों और पुस्तकों के अलावा सामान्य जगत में रेखांकित नहीं किया जा सका।' राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्यवक्ता प्रतिष्ठित

एमपीपीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

महायोगी गोरखनाथ लोकभाषा में गद्यविधा के प्रथम प्रयोगकर्त्ता : प्रो. रामदेव शुक्ल

साहित्यकार प्रो.रामदेव शुक्ल ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ हिन्दी एवं भोजपुरी दोनों के आदिकवि ही नहीं अपितु लोकभाषा में गद्यविधा के प्रथम प्रयोगकर्ता भी हैं। गोरख ऐसे आध्यात्मिक नेता हैं जिन्हें भारत का हर क्षेत्र अपनी भूमि में उन्हें पैदा हुआ मानता है और उन पर गर्व करता है। इस दिशा में बहुत से शोधात्मक कार्य करने की आवश्यकता है। अध्यक्षता करते हुए पूर्व कुलपति प्रो.यूपी. सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ और उनका नाथपंथ भारत के धार्मिक-आध्यात्मिक-सामाजिक परिवर्तन की धुरी है। भारत में योग ने सामाजिक समरसता को धर्म-अध्यात्म का आधार बनाया। बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए उत्तर प्रदेश हिन्दुस्तानी एकेडमी के अध्यक्ष डॉ. यूपी सिंह ने कहा कि प्रारम्भ में हिन्दी साहित्य का लेखन ऐसे हाथों में था जो भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों को समझ नहीं पाए अथवा जान बुझकर उपेक्षित किए। महायोगी गोरखनाथ ने सामाजिक परिवर्तन एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण का जो अभियान चलाया वह इसीलिए जन-जन को जोड़ पाया, क्योंकि वे लोकभाषा का उपयोग कर रहे थे।

उद्घाटन समारोह का संचालन, अविनाश प्रताप सिंह ने तथा स्वागत एवं प्रस्ताविकी प्राचार्य डॉ.प्रदीप राव ने किया। संगोष्ठी में डॉ. कन्हैया सिंह, डॉ. अनुज प्रताप सिंह, योगेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ आद्याप्रसाद द्विवेदी, डॉ.वेदप्रकाश पाण्डेय, डॉ. अच्छेलाल, डॉ.अनुज प्रताप सिंह,डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त,डॉ पृथ्वीराज सिंह, डॉ. शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ.आर.पी.सिंह, प्रो.सुमित्रा सिंह, डॉ.शैलेन्द्र प्रताप सिह, श्री नरिंग बहादुर चन्द, डॉ मान्धाता सिंह, सहित बड़ी संख्या में नगर के प्रबुद्धजन भी उपस्थित थे।

Scanned with OKEN Scanner

सहारा | www.rashtriyasahara.com

नाथपंथ के योगियों ने समृद्ध की लोकभाषा

गोरखपुर (एसएनबी)। नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरक्षनाथ हिन्दी एवं भोजपुरी के आदिकवि हैं। संस्कृत के आदिकवि महर्षि वाल्मिकी की तरह ही हिन्दी के प्रथम कवि के रूप में प्रमाणित और प्रतिष्ठित गुरु श्रीगोरक्षनाथ और उनका दर्शन अकादमिक जगत की उपेक्षा के शिकार रहे। भक्त कवियों के अलावा लोकभाषा को नाथपंथ के योगियों ने जितना समृद्ध किया शायद ही कोई पंथ,सम्प्रदाय अथवा भारत के अन्य धार्मिक-आध्यात्मिक संगठन ने किया हो।

उक्त बातें उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. राजनारायण शुक्ल ने कहीं। श्री शुक्ल महाराणा प्रताप पीजी. कॉलेज, जंगल धूसड़ में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान एवं महाविद्यालय द्वारा संचालित गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में 'लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ का योगदान' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम और अकादमिक क्षेत्र में उन्हें उपयुक्त स्थान न मिलने के कारण हिन्दी सहित लोकभाषा के संवर्धन में महायोगी गोरखनाथ एवं नाथपंथ के योगियों का योगदान अब तक कुछ विद्वानों के मौलिक शोधों और पुस्तकों के अलावा सामान्य जगत में रेखांकित नहीं किया जा सका। राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्यवक्ता प्रतिष्ठित

एमपीपीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

महायोगी गोरखनाथ लोकभाषा में गद्यविधा के प्रथम प्रयोगकर्त्ता : प्रो. रामदेव शुक्ल

साहित्यकार प्रो.रामदेव शुक्ल ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ हिन्दी एवं भोजपुरी दोनों के आदिकवि ही नहीं अपितु लोकभाषा में गद्यविधा के प्रथम प्रयोगकर्ता भी हैं। गोरख ऐसे आध्यात्मिक नेता हैं जिन्हें भारत का हर क्षेत्र अपनी भूमि में उन्हें पैदा हुआ मानता है और उन पर गर्व करता है। इस दिशा में बहुत से शोधात्मक कार्य करने की आवश्यकता है। अध्यक्षता करते हुए पूर्व कुलपति प्रो.यूपी. सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ और उनका नाथपंथ भारत के धार्मिक-आध्यात्मिक-सामाजिक परिवर्तन की धुरी है। भारत में योग ने सामाजिक समरसता को धर्म-अध्यात्म का आधार बनाया। बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए उत्तर प्रदेश हिन्दुस्तानी एकेडमी के अध्यक्ष डॉ. यूपी सिंह ने कहा कि प्रारम्भ में हिन्दी साहित्य का लेखन ऐसे हाथों में था जो भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों को समझ नहीं पाए अथवा जान बुझकर उपेक्षित किया। महायोगी गोरखनाथ ने सामाजिक परिवर्तन एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण का जो अभियान चलाया वह इसीलिए जन-जन को जोड़ पाया, क्योंकि वे लोकभाषा का उपयोग कर रहे थे।

उद्घाटन समारोह का संचालन [illegible] अविनाश प्रताप सिंह ने तथा स्वागत एवं प्रस्ताविकी प्राचार्य डॉ.प्रदीप राव ने किया। संगोष्ठी में डॉ. कन्हैया सिंह, डॉ. अनुज प्रताप सिंह, योगेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ आद्याप्रसाद द्विवेदी, डॉ.वेदप्रकाश पाण्डेय, डॉ. अच्छेलाल, डॉ.अनुज प्रताप सिंह,डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त,डॉ पृथ्वीराज सिंह, डॉ. शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ.आर.पी.सिंह, प्रो.सुमित्रा सिंह, डॉ.शैलेन्द्र प्रताप सिंह, श्री नरसिंह [illegible] चन्द, डॉ मान्धाता सिंह, सहित बड़ी संख्या में [illegible] नगर के प्रबुद्धजन भी उपस्थित थे।

दैनिक जागरण गोरखपुर, 24 अक्टूबर 2018

नाथ पंथ ने भारतीय भाषाओं को समृद्ध किया

जासं, गोरखपुर : महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में महायोगी गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी मंगलवार को सम्पन्न हुई। अंतिम दिन बतौर मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. राम किशोर शर्मा ने कहा कि नाथ पंथ ने न केवल भारत की आध्यात्मिक साधना को समृद्ध किया बल्कि भारतीय भाषाओं को भी समृद्ध किया।

उन्होंने कहा कि नाथ योगियों ने अपनी साधना पद्धति को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हर क्षेत्र की भाषा में अपना संदेश दिया। तमिल, उड़िया, मराठी, कन्नड़, बंगाली, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, पंजाबी जैसी भाषाओं में नाथ योगियों की बानी और रचनाएं प्राप्त होना इस बात की तस्दीक है। नाथ योगियों ने एक भाषा के शब्द को दूसरी भाषा से जोड़ने का कार्य किया। गोरखबानी सिद्ध-सिद्धान्त पद्धति, अमरौघ-प्रबोध, योग-मार्तण्ड, गोरक्षकौमुदी, गोरक्षकल्प, गोरक्ष गीता, गोरक्ष चिकित्सा, गोरक्ष पंचम, गोरक्ष

संबोधित करते हुए प्रो. राम किशोर शर्मा

शतक, गोरक्ष पद्धति, गोरक्ष शास्त्र, गोरक्ष संहिता, ज्ञान प्रकाशक, ज्ञानशतक, ज्ञानामृत योग सिद्धांत पद्धति, विवेक मार्तण्ड, श्रीनाथसूत्र, हठयोग, हठसंहिता जैसी 80 ग्रन्थों का प्रणयन नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ ने किया। ये सभी रचनाएं हिन्दी, संस्कृत एवं अवधी में हैं।

विशिष्ट अतिथि मॉरीशस के शिक्षा मंत्रालय के डॉ. अशोक कुमार रामप्रसन्न ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ की साहित्य रचना की परंपरा को नाथ पंथ के अन्य योगियों ने भी आगे बढ़ाया। योगी चैरंगीनाथ, चर्पटीनाथ, कानिफा[illegible] जालंधरनाथ, भर्तृहरि, गोपी गहनीनाथ, निवृत्तिनाथ, ज्ञान[illegible]थ, रतननाथ, नागनाथ, चुणकरनाथ, माल्लिकानाथ, बालनाथ आदि की रचनाएं देश की विभिन्न भाषाओं में प्राप्त होती है।

मुख्य वक्ता डॉ. वेद प्रकाश पांडेय ने कहा कि नाथपंथ के योगियों के दर्शन एवं भाषा का प्रभाव तुलसी, कबीर, नामदेव, तुकाराम, एकनाथ, हरिदास निरंजनी, गुरुनानक, जैसे विविध संत-महात्माओं की रचनाओं में देखा जा सकता है। अध्यक्षता करते हुए डॉ. प्रदीप राव ने कहा कि भारत में सामाजिक-आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए जब-जब किसी ऋषि, संत अथवा महापुरुष ने अभियान चलाया अथवा किसी पंथ की नींव डाली, उसने लोक भाषा को समृद्ध किया।

संगोष्ठी को जेएम महाविद्यालय बिहार के पूर्व प्रधानाचार्य डॉ. विश्वनाथ शर्मा, डॉ. रवींद्र कुमार 'शाहाबादी', बीएचयू के डॉ. अच्छेलाल ने भी अपने विचार रखे। संचालन आरती सिंह ने किया।

Scanned with OKEN Scanner

नाथपंथियों ने भाषाओं को जोड़ा-प्रो.राम

गोरखपुर,२३ अक्टूबर। नाथपंथ ने न केवल भारत की आध्यात्मिक साधना को समृद्ध किया अपितु क्रियात्मक योग के वे प्रवर्तक थे। नाथपंथी योगियो ने अपनी साधना पद्धति के जन-जन तक पहुँचाने के लिए हर प्रस्त-हर क्षेत्र की भाषा में अपनी बात कही, अपनी रचनाएं की। तमिल, उड़िया, मराठी, कन्नड़, बंगाली, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, पंजाबी इत्यादि भाषाओं में नाथपंथी योगियो की बानिया एवं उनकी रचनाएँ प्राप्त होती है। भारत वर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं जिसे नाथपंथ के योगियों ने प्रभावित न किया हो। नाथपंथ योगियों ने एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में जोडा। इस प्रकार उनके भाषाओं के आपसी शब्दों को साझा करने की एक सशक्त परम्परा नाथपंथ ने प्रारम्भ की। यह बाते महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज जंगल धूसड़ द्वारा संचालित महायोगी गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्विद्यालय इलाहाबाद के हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. राम किशोर शर्मा ने कही।

उन्होंने आगे कहा कि 'गोरखबानी' सिद्ध-सिद्धान्त पद्धति, अमरौध-प्रबोध, योग-मार्तण्ड, गोरक्षकौमुदी, गोरक्षकल्प, गोरक्षगीता, गोरक्षचिकित्सा, गोरक्षपंचम, गोरक्षशतक, गोरक्षपद्धति, गोरक्षशास्त्र, गोरक्षसंहिता, महायोगी गोरखनाथ ने किया।

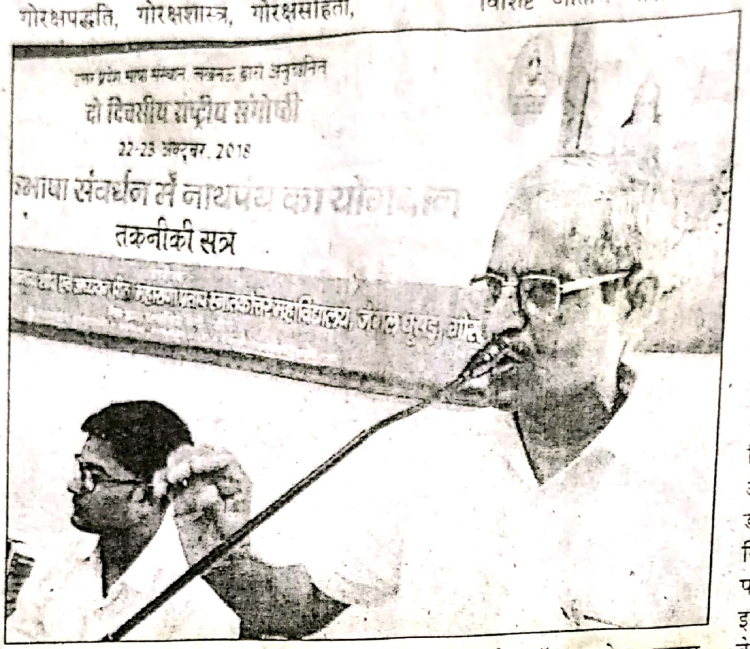

विशिष्ट अतिथि मारीशस के शिक्षामंत्रालय के डॉ. आशोक कुमार रामप्रसन्न ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ की साहित्य रचना की परम्परा को नाथपंथ के अन्य योगियों ने भी इसे आगे बढ़ाया। नाथपंथ के प्रसिद्ध योगी चौरंगीनाथ, चर्पटीनाथ, कानिफानाथ, जालंधरनाथ, भर्तृहरि, गोपीचन्द, गहनीनाथ, निवृत्तिनाथ, ज्ञाननाथ, रतननाथ, नागनाथ, चुणकरनाथ, माल्लिकानाथ, बालनाथ जैसे अनेक प्रसिद्ध नाथपंथ के योगियों की रचनाएँ देश के विभिन्न भाषाओं में प्राप्त होती है। मुख्य वक्ता डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि नाथपंथ के योगियों के दर्शन एवं भाषा का प्रभाव मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन पर भी पड़ा। तुलसी, कबीर, नामदेव, तुकाराम, एकनाथ, हरिदास निरंजनी, गुरुनानक, जैसे विविध सन्त-महात्माओ की रचनाओं पर नाथपंथी साहित्य और भाषा का प्रभाव देखा जा सकता है। अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने कहा कि भारत में सामाजिक-आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए जब-जब किसी ऋषि, सन्त अथवा महापुरुष ने अभियान चलाया अथवा किसी पंथ की नींव डाली, उसने लोक भाषा को समृद्ध किया। बिना लोकभाषा के प्रयास के सामाजिक परिवर्तन का अभियान चल ही नही सकता। इस अवसर पर जे.एम.महाविद्यालय बिहार के पूर्व प्रधानाचार्य डॉ. विश्वनाथ शर्मा वीरकुंवर सिंह विश्वविद्यालय छपरा, बिहार के डॉ रविन्द्र कुमार 'शाहाबादी' बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के डॉ. अच्छेलाल ने भी अपने-अपने विचार रखें। संचालन डॉ. आरती सिंह ने किया।

गोरखपुर। बुधवार • 24 अक्टूबर • 2018

राष्ट्रीय सहारा www.rashtriyasahara.com

सभी भारतीय भाषाओं पर नाथपंथ का प्रभाव

गोरखपुर (एसएनबी)। नाथपंथ ने न केवल भारत की आध्यात्मिक साधना को सम किया अपितु क्रियात्मक योग के वे प्रवर्तक भी थे। नाथपंथी योगियों ने अपनी साधना पद्धति को जन-जन तक पहुँचाने के लिए हर क्षेत्र की भाषा में अपनी बात कही, अपनी रचनाएं की। तमिल, उड़िया, मराठी, कन्नड़, बंगाली, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, पंजाबी इत्यादि भाषाओं में नाथपंथी योगियों की बानियां एवं उनकी रचनाएं प्राप्त होती है। भारत वर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं जिसे नाथपंथ के यो ने प्रभावित न किया हो।

उक्त बातें महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ द्वारा चालित महायोगी गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर बोलते ए मुख्य अतिथि इलाहाबाद विविद्यालय इलाहाबाद के हिन्दी भाग के पूर्व आचार्य प्रो. राम किशोर शर्मा ने कही। उन्होंने हा कि 'गोरखबानी' सिद्ध-सिद्धान्त पद्धति, अमरौध-प्रबोध, ग-मार्तण्ड, गोरक्षकौमुदी, गोरक्षकल्प, गोरक्षगीता, क्षचिकित्सा, गोरक्षपंचम जैसे 80 ग्रन्थों का प्रणयन नाथपंथ प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ ने किया। ये सभी रचनाएं हिन्दी, कृत एवं अवधी में है तथा देश की विभिन्न लोकभाषाओं में इनका विवरण एवं गोरखनाथ के उपदेश मिलते हैं।

विशिष्ट अतिथि मॉरीशस के शिक्षामंत्रालय के डॉ.अशोक कुमार रामप्रसन्न ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ की साहित्य रचना की परम्परा को नाथपंथ के अन्य योगियों ने भी आगे बढ़ाया। नाथपंथ के प्रसिद्ध योगी चौरंगीनाथ, चर्पटीनाथ,

एमपीपीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

महायोगी गोरखनाथ की साहित्य रचना परंपरा को नाथपंथ के अन्य योगियों ने भी आगे बढ़ाया : डा. अशोक

कानिफानाथ, जालंधरनाथ, भर्तृहरि, गोपीचन्द, गहनीनाथ, निवृत्तिनाथ, ज्ञाननाथ, रतननाथ, नागनाथ, चुणकरनाथ, माल्लिकानाथ, बालनाथ जैसे अनेक प्रसिद्ध नाथपंथ के योगियों की रचनाएं देश के विभिन्न भाषाओं में प्राप्त होती है। मुख्य वक्ता डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि नाथपंथ के योगियों के दर्शन एवं भाषा का प्रभाव मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन पर भी पड़ा। तुलसी, कबीर, नामदेव, तुकाराम, एकनाथ, हरिदास निरंजनी, गुरुनानक, जैसे विविध सन्त-महात्माओं की रचनाओं पर नाथपंथी साहित्य और भाषा का प्रभाव देखा जा सकता है। यद्यपि कि लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ के योगियों के प्रभाव पर अभी शोधपूर्ण कार्य होना बाकी है, जिसे स्थापित हो रही शोधपीठों अथवा शोधकेन्द्रों को अपनी कार्ययोजना का हिस्सा बनाना होगा।

अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने कहा कि भारत में सामाजिक-आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए जब-जब किसी ऋषि, सन्त अथवा महापुरुष ने अभियान चलाया अथवा किसी पंथ की नींव डाली, उसने लोक भाषा को समृद्ध किया। बिना लोकभाषा के प्रयास के सामाजिक परिवर्तन का अभियान चल ही नही सकता। नाथपंथ जितना प्रभावी सर्वव्यापी जनान्दोलन बना उतना ही उसने देश की सभी लोकभाषा को समृद्ध किया। इस अवसर पर जेएम महाविद्यालय बिहार के पूर्व प्रधानाचार्य डॉ. विश्वनाथ शर्मा वीरकुँवर सिंह विश्वविद्यालय छपरा, बिहार के डॉ रविन्द्र कुमार 'शाहाबादी' बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के डॉ.अच्छेलाल ने भी अपने-अपने विचार रखे। संचालन डॉ.आरती सिंह ने किया।

अवध गाजा रखन पर कैद व जुर्माना

गोरखपुर।

सहारा न्यूज ब्यूरो।

अवैध गांजा रखने का आरोप सिद्ध पाए जाने पर अपर सत्र न्यायाधीश अवधेश कुमार ने शाहपुर थाना क्षेत्र के अकोलवा टोला जंगल तुलसीराम निवासी अभियुक्त उमेश उर्फ रामू को सात माह के कारावास एवं दो हजार रुपया अर्थदंड से दंडित किया। अर्थदंड न अदा करने पर अभियुक्त को एक माह का कारावास अलग से भुगतना होगा। अभियोजन पक्ष की ओर से एडीजीसी धर्मेन्द्र कुमार मिश्र ने मामले को न्यायालय में प्रस्तुत किया। न्यायाधीश ने पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर उक्त सजा सुनाई।

Scanned with OKEN Scanner